Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं

यूहन्ना ४: १-२६

खोदाई: यहूदी और सामरी एक-दूसरे से इतनी नफरत क्यों करते थे? यह इतना चौंकाने वाला क्यों था कि येशुआ उससे बात कर रहा था? आप महिला की प्रतिक्रिया का वर्णन कैसे करेंगे? पद १० में यीशु ने उस पर पासा कैसे पलट दिया? महिला के जवाब में वह असल में क्या कह रही थी? वह निकोडेमस की तरह कैसे थी? श्लोक १६ में मसीहा ने बातचीत का विषय अचानक से अपने निजी जीवन में क्यों बदल दिया? पति न होने के उसके दावे पर क्राइस्ट ने जिस तरह से प्रतिक्रिया दी, उससे आपको क्या आश्चर्य होता है? वह धर्मशास्त्र पर बहस क्यों करना चाहती थी? इस दृश्य के संदर्भ में, यीशु का यह बताने का क्या मतलब है कि ईश्वर उन लोगों को चाहता है जो आत्मा और सच्चाई से उसकी पूजा करते हैं?

चिंतन: इस कहानी में आप किस तरह से महिला की पहचान कर सकते हैं? यह कहानी पापी लोगों के प्रति प्रभु के रवैये के बारे में क्या प्रकट करती है? आपने कब अपने प्रति परमेश्वर की चिंता और प्रेम को महसूस किया है? क्या चीज़ आपको दूसरों को अपना प्यार दिखाने से रोकती है? पापियों के उद्धारकर्ता के प्रति महिला की प्रतिक्रिया आपको कैसे प्रेरित करती है? इस कहानी में गुड शेफर्ड के कार्य आपको दूसरों के साथ व्यवहार करने के लिए कैसे प्रोत्साहित करते हैं?

इस अध्याय में बाइबल की सबसे परिचित और सुंदर बातचीत शामिल है। सामरी महिला एक कालजयी शख्सियत है – न केवल एक विशिष्ट सामरी बल्कि एक विशिष्ट इंसान भी। यहां येशुआ एक बहिष्कृत महिला को मुक्ति प्रदान करता है जैसे कि वह उसे पानी पिला रहा हो। लेकिन उनकी सीधी पेशकश को एक उथला संदेश समझने की गलती न करें।

निकोडेमस के विपरीत, वह कोई धर्मशास्त्री नहीं थी, लेकिन उसका दिल अपने पाप को स्वीकार करने और मसीहा में विश्वास करने के लिए तैयार था। महिला की पृष्ठभूमि के बारे में हम बस इतना जानते हैं कि उसका जीवन व्यभिचार और टूटी शादियों की उलझन में था। उसकी संस्कृति में, यह उसे एक तिरस्कृत बहिष्कृत बना देता, जिसकी एक सामान्य वेश्या से अधिक कोई सामाजिक स्थिति नहीं होती। वह बातचीत के लिए मुख्य लक्ष्य के अलावा कुछ भी नहीं लग रही थी। उसे अपने पास बुलाने के लिए येशुआ को उसे उसकी उदासीनता, वासना, आत्मकेंद्रितता, अनैतिकता और धार्मिक पूर्वाग्रह का सामना करने के लिए मजबूर करना पड़ा।

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 2

सामरी महिला निकुदेमुस से एकदम विपरीत है। वे वस्तुतः विपरीत थे। वह एक यहूदी



था; वह एक सामरी थी. वह एक आदमी था; वह एक महिला थी. वह एक धार्मिक नेता थे; वह व्यभिचारिणी थी. वह विद्वान था; वह अज्ञानी थी. वह सर्वोच्च वर्ग का सदस्य था; वह निम्नतम में से थी – इस्राएल से बहिष्कृत से भी कम, क्योंकि वह एक सामरी बहिष्कृत थी। वह धनी था; वह गरीब थी. उन्होंने यीशु को ईश्वर के शिक्षक के रूप में पहचाना; उसे कोई अंदाज़ा नहीं था कि वह कौन था। निकुदेमुस ने मसीहा की खोज की; लेकिन यहां उद्धारकर्ता ने उसे ढूंढ लिया। वह रात को यीशु के पास आया; हालाँकि मसीह ने उससे दोपहर के बारे में बात की। वे दोनों शायद ही इससे अधिक भिन्न हो सकते थे। परन्तु यह वही मनुष्य का पुत्र था जिसने अपने आप को उस पर प्रकट किया। तो यह मुख्य रूप से एक सामरी महिला की कहानी नहीं है। बल्कि, यह यीशु द्वारा स्वयं को मसीहा के रूप में प्रकट करने का विवरण है। उद्धारकर्ता के लिए यह प्रकट करने के सभी अवसरों में कि वह कौन था, उसने सबसे पहले सामरिया की इस अज्ञात महिला को बताना चुना।

सामरिया इस्राएल का उत्तरी राज्य था। ५५६ ईसा पूर्व में सामरिया के महान पाप के कारण परमेश्वर ने अश्शूरियों को इस पर कब्ज़ा करने की अनुमति दी। सामरिया के उन्नीस राजाओं में से, एक भी धर्मी राजा ऐसा नहीं था जो उत्तरी साम्राज्य के सिंहासन पर बैठा हो। लेकिन अश्शूरियों ने विजित क्षेत्रों के साथ बेबीलोनियों की तुलना में अलग व्यवहार किया। उदाहरण के लिए, जहां बेबीलोनवासी सबसे अच्छे और सबसे प्रतिभाशाली लोगों को बेबीलोन, डैनियल और ईजेकील में वापस ले जाएंगे, वहीं असीरियन कब्जे वाले क्षेत्र में चले जाएंगे और विजित लोगों के साथ विवाह करेंगे और उन्हें असीरियन संस्कृति में आत्मसात कर लेंगे (दूसरा राजा १७:२४)। विरोध करना व्यर्थ था. इसलिए उत्तरी साम्राज्य के पतन के बाद, वे असीरियन चले आए और उनके साथ अंतर्जातीय विवाह किया। इससे उनका यहूदीपन कमज़ोर हो गया और दक्षिणी साम्राज्य उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगा। वे उन्हें आधी नस्लों के रूप में देखते थे और किसी भी तरह से उनके बराबर नहीं थे।

परिणामस्वरूप, यहूदियों ने सामरिया को पवित्र भूमि से संबंधित नहीं माना, बल्कि विदेशी देश की एक पट्टी के रूप में माना – जैसा कि तल्मूड ने इसे नामित किया है (छ.ग. २५ए), गलील और यहूदिया के बीच हस्तक्षेप करने वाली एक “जीभ”। सुसमाचारों

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 3

से हम जानते हैं कि सामरियों को न केवल अन्यजातियों और अजनबियों की श्रेणी में रखा गया था (मत्ती १०:५; यूहन्ना ८:४८), बल्कि सामरी शब्द ही निंदा का विषय था। सिराच के पुत्र (एक्लेसिएस्टिकस १.२५-२६) कहते हैं, ”दो प्रकार के राष्ट्र हैं, जिनसे मेरा हृदय घृणा करता है, और तीसरा कोई राष्ट्र ही नहीं है; वे जो सामरिया के पर्वत पर बैठते हैं, और वे जो शकेम के निवासी हैं।

जब यहूदी बेबीलोन की कैद से लौटे और यरूशलेम में मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू किया, तो सामरी लोग उनकी मदद करना चाहते थे। लेकिन यहूदियों ने उनकी मदद स्वीकार नहीं की क्योंकि वे जातीय रूप से एक मिश्रित नस्ल थे और उन्होंने अपनी पूजा में मूर्तिपूजा को शामिल कर लिया था। सुलैमान की मृत्यु के बाद राज्य दो भागों में विभाजित हो गया। राजा यारोबाम ने मूर्तिपूजा के आधार पर उत्तरी राज्य इस्राएल की स्थापना की। उसने पूजा की वस्तु को ईश्वर से बदलकर सुनहरे बछड़े बना दिया; उस ने लेवियों से लेकर सब प्रकार के लोगों में उपासना के याजकों को बदल दिया; उसने झोपड़ियों के पर्व की तिथि सातवें महीने से बदल कर आठवें महीने कर दी; और उसने पूजा का स्थान यरूशलेम से बदलकर बेतेल और दान कर दिया (प्रथम राजा १२:२५-३३)। वास्तव में, उन्होंने केवल पेंटाटेच को मान्यता दी, और उन्होंने अपनी बाइबिल से येरुशलायिम के सभी संदर्भ हटा दिए। इस घृणा के कारण वे यरूशलेम के यहूदियों के कट्टर विरोधी हो गये। यह लगभग ४५० ईसा पूर्व था जब वह झगड़ा हुआ था, और जब येशुआ घटनास्थल पर आया तो यह हमेशा की तरह कड़वा था।

यह तब और अधिक कड़वा हो गया था जब पाखण्डी यहूदी, मनश्शे ने सामरी सनबल्लत (नहेमायाह १३:२८) की एक बेटी से शादी की और गिरिज्जिम पर्वत पर एक प्रतिद्वंद्वी मंदिर स्थापित करने के लिए आगे बढ़ा जो सामरी क्षेत्र के केंद्र में था। बाद में मैकाबीन दिनों में, १२९ ईसा पूर्व में, यहूदी जनरल और नेता जॉन हिरकेनस ने सामरिया के खिलाफ हमले का नेतृत्व किया और गेरिज़िम पर्वत पर मंदिर को लूट लिया और नष्ट कर दिया। इस कारण यहूदी और सामरी एक दूसरे से बैर रखते थे।

अपने विश्वास के भ्रष्टाचार के कारण रब्बियों ने सामरी लोगों के साथ सीमित संपर्क की मांग की। एक लोकप्रिय कहावत थी, “क्या मैं कभी किसी सामरी पर अपनी नजरें नहीं गड़ाऊंगा।” रब्बियों ने सिखाया, “कोई इस्राएली किसी सामरी वस्तु में से एक कौर भी न खाए, क्योंकि जो थोड़ा कौर खाता है वह मानो सूअर खा गया है।”

अब यीशु को पता चला कि फरीसियों ने सुना था कि वह लोकप्रियता हासिल कर रहा था और जॉन की तुलना में अधिक शिष्यों को बपतिस्मा दे रहा था – हालाँकि वास्तव में यह यीशु नहीं था जिसने बपतिस्मा दिया था, बल्कि उसका चेल्मिडिम (यूहन्ना ४:१-२)। हालाँकि, यीशु ने सही समय तक टकराव को रोका। वह हर स्थिति पर नियंत्रण रखता था, यहाँ तक कि अपनी मृत्यु के समय और स्थान पर भी।

चार सामान्य सिद्धांत हैं जो मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 4

सत्य के रूप में सामने आते हैं जिन पर जोर दिया जाना चाहिए। सबसे पहले, कुएं का सबक है: मनुष्य का पुत्र खोए हुए को खोजने और बचाने आया था (लूका १९:१०)।

इसलिए यीशु ने यहूदिया छोड़ दिया और एक बार फिर गलील लौट गया (यूहन्ना ४:३)। बाईं ओर के लिए जॉन का शब्द कुछ हद तक असामान्य है जब इसका उपयोग किसी स्थान को छोड़ने के अर्थ में किया जाता है। इसका अक्सर परित्यक्त अनुवाद किया जाता है, और यहाँ इसका कुछ अर्थ हो सकता है। दक्षिण में यहूदिया और उत्तर में गलील के बीच, एक खोए हुए और त्यागे हुए लोग सामरिया नामक एक आध्यात्मिक गैर-पुरुष भूमि में रहते थे – फिर भी उन्हें खुशखबरी सुनने की भी ज़रूरत थी।

अब उसे सामरिया से होकर जाने की आवश्यकता थी (योचनन ४:४ एनकेजेवी)। किसी भी मानचित्र पर नज़र डालने से पता चलता है कि सबसे सीधा मार्ग सीधे सामरिया से होकर जाता था। लेकिन येशुआ के दिनों में, कोई भी स्वाभिमानी यहूदी हमेशा एक अलग रास्ते पर चलता था। पसंदीदा मार्ग जॉर्डन नदी के पूर्व में जाता था, फिर डेकापोलिस के माध्यम से उत्तर में जॉर्डन को फिर से गलील में पार करने से पहले जाता था। वह वैकल्पिक मार्ग रास्ते से बाहर था, लेकिन वह सामरिया से होकर गुजरता था, और यही पूरा मुद्दा था। लेकिन उसे जाने की ज़रूरत थी क्योंकि उसे एक उद्देश्य पूरा करना था, और इसके लिए उसे इस ऐतिहासिक कुएं पर रुकना था, एक परेशान महिला से बात करनी थी और एक अभूतपूर्व खुलासा करना था। इसलिए वह सामरिया के सूखार नामक शहर में आया, जो कि ज़मीन का वह टुकड़ा जो याकूब ने अपने बेटे यूसुफ को दिया था (यूहन्ना ४:५)। सामरिया की सड़क सूखार से थोड़ी ही दूर जाती है। एक शाखा उत्तर-पूर्व से सिथोपोलिस तक जाती है; दूसरा पश्चिम में नब्लस और फिर उत्तर में एंगन्निम तक जाता है। सड़क के दोराहे पर आज भी प्रसिद्ध जैकब का कुआँ है।

यह एक ऐसा क्षेत्र था जिसके साथ कई यहूदी यादें जुड़ी हुई थीं। वहां ज़मीन का एक टुकड़ा था जिसे जैकब ने खरीदा था (उत्पति Hz पर मेरी टिप्पणी देखें – शेकेम में याकूब की अवज्ञा)। याकूब ने, अपनी मृत्यु शय्या पर, इसे जोसेफ को दे दिया था (उत्पति Kz पर मेरी टिप्पणी देखें – तब इज़राइल ने युसुप से कहा: मैं मरने वाला हूं, लेकिन परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेंगे)। और, मिस्र में यूसुफ की मृत्यु पर, उसके शरीर को फिलिस्तीन वापस ले जाया गया और वहाँ दफनाया गया (यहोशू २४:३२)। तो उस ज़मीन के चारों ओर बहुत सारी यहूदी यादें इकट्ठी हो गईं।

कुआँ बहुत गहरा है (यूहन्ना ४:११), नरम चूना पत्थर के स्लैब के माध्यम से खोदे गए छेद के माध्यम से केवल एक बहुत लंबी रस्सी द्वारा पहुँचा जा सकता है। स्पष्टतः, कोई भी इससे पानी नहीं प्राप्त कर सकता था जब तक कि उनके पास पानी खींचने के लिए कुछ न हो। नीचे का जलाशय झरने से सिंचित है इसलिए इसका पानी हमेशा ताजा, शुद्ध और ठंडा रहता है। यह उस क्षेत्र में एकमात्र कुआँ और बेहतरीन पानी है, जहाँ खारे झरने आम हैं। और याकूब की संपत्ति पर ऐसे कुएं के अस्तित्व को इस्राएलियों ने अपने कुलपिता के प्रति प्रभु की कृपा और भलाई के संकेत के रूप में देखा।

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 5

याकूब का कुआँ वहीं था, और यीशु यात्रा से थका हुआ कुएँ के पास बैठ गया। यह दोपहर का समय था, या दिन का सबसे गर्म समय था (योचनन ४:६)।

दूसरा, उस स्त्री की शिक्षा यह है: सामरिया की एक स्त्री जल भरने को आई। तब, अब की तरह, महिलाएँ कुओं से पानी निकालती हैं। यीशु ने उससे कहा: क्या तुम मुझे पानी दोगे (यूहन्ना ४:७)?

संयोगवश नहीं, उसके प्रेरित भोजन खरीदने के लिए शहर में गए थे (यूहन्ना ४:८)। मसीहा उस गरीब आत्मा के साथ अकेले रहना चाहता था। जॉन का गॉस्पेल मसीह को देह में प्रकट हुए ईश्वर के रूप में प्रस्तुत करता है, और फिर भी कोई अन्य गॉस्पेल नहीं है जिसमें हम इतनी बार उसे पापियों के साथ अकेले देखते हैं। हम उसे निकुदेमुस के साथ अकेले देखते हैं; इस सामरी स्त्री के साथ अकेले; व्यभिचार के कृत्य में पकड़ी गई महिला के साथ अकेले; और अकेले उस आदमी के साथ जिसकी आँखें उसने खोली थीं, और जिसे बाद में आराधनालय से बाहर निकाल दिया गया था। परमेश्वर के साथ अकेले ही वह जगह है जहां पापी को होना चाहिए – बीच में कुछ भी नहीं या आस-पास कोई भी नहीं। किसी पुजारी, किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। पापी को परमेश्वर और उसके वचन के साथ अकेले रहने दो।

सामरी स्त्री ने उससे कहा, “तू यहूदी है और मैं सामरी स्त्री हूँ। आप मुझसे ड्रिंक के लिए कैसे पूछ सकते हैं?” क्योंकि यहूदी आम तौर पर सामरियों के साथ मेलजोल नहीं रखते थे (योचनान ४:९)। यह टकराव अपने आप में चौंकाने वाला है, क्योंकि एक यहूदी पुरुष, विशेष रूप से एक सम्मानित रब्बी, कभी भी किसी अनजान महिला, विशेष रूप से एक सामरी महिला से बात नहीं करेगा। बाद में हम देखेंगे कि येशु को उससे बात करते हुए देखना प्रेरितों के लिए भी उतना ही चौंकाने वाला था। और उसके लिए किसी अशुद्ध स्त्री के अशुद्ध प्याले से पीना अकल्पनीय माना जाता। जैसे-जैसे उनकी चर्चा आगे बढ़ी, उसका विश्वास बढ़ता गया। लेकिन उनकी बातचीत की शुरुआत में, यीशु उसके लिए केवल एक यहूदी था।

इसका मतलब यह नहीं था कि वे सामरी लोगों से जुड़ नहीं सकते थे, या उनसे कोई संपर्क नहीं कर सकते थे। रब्बियों ने सिखाया कि सामरी लोगों को ऐसी स्थिति में नहीं रखा जाना चाहिए जहां यहूदियों का उन पर कुछ भी बकाया हो। रब्बी कानून के तहत एक यहूदी को किसी सामरी से कुछ भी स्वीकार नहीं करना था जो किसी भी तरह से यहूदी को उनके लिए बाध्य करता हो। उनसे भोजन खरीदना जायज़ था जैसा कि टैल्मिडिम कर रहे थे। यहां समस्या यह थी कि यीशु इस सामरी महिला से बिना पैसे दिए पानी मांग रहा था, इसलिए उनके सोचने के तरीके से वह किसी तरह से उसके प्रति बाध्य हो गया।

सामरी लोग यहूदियों से नफरत करते थे और सिय्योन जाने के लिए सामरिया से यात्रा करने वाले यहूदियों को अक्सर रोकते थे (या कभी-कभी मार भी देते थे)। हालाँकि, उन्होंने शहर से गलील जाने वाले किसी भी यहूदी को कभी नहीं रोका, जैसा कि यीशु कर

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 6

रहे थे, क्योंकि उन्हें यहूदियों को यरूशलेम छोड़ते हुए देखना पसंद था।

तीसरा, पानी की शिक्षा है: जो कोई प्यासा हो वह मेरे पास आए और पीए (यूहन्ना ७:३७)। सबसे पहले वह उसमें अनन्त जीवन की आवश्यकता पैदा करता है। उसके वास्तविक प्रश्न को दरकिनार करते हुए यीशु ने उसे यह कहते हुए उत्तर दिया: यदि तुम परमेश्वर का उपहार जानते और वह कौन है जो तुमसे पेय मांगता है, तो तुम उससे पूछते और वह तुम्हें जीवन का जल देता (योचनान ४:१०)। हिब्रू में, मयिम चय्यिम, का शाब्दिक अर्थ है, जीवित जल, जिसका अर्थ है एक धारा या झरने से बहता पानी, जो एक कुंड में संग्रहीत पानी के विपरीत है। लाक्षणिक रूप से, येशुआ के साथ, इसका अर्थ आध्यात्मिक जीवन है। उसके लिए जीवित पानी का मतलब बहता पानी था, दूसरे शब्दों में, एक भूमिगत कुआँ या ताज़ा पानी। लेकिन यीशु आध्यात्मिक जीवन जल के बारे में बात कर रहे हैं। महिला को अभी यह बात समझ नहीं आई है, लेकिन जैसे-जैसे बातचीत आगे बढ़ेगी वह समझ जाएगी।

उसने येशुआ से पूछताछ की, लेकिन ऐसा करते समय उसने सामरी धर्मशास्त्र के बारे में कुछ खुलासा किया। महोदय, महिला ने कहा: आपके पास खींचने के लिए कुछ भी नहीं है और कुआं गहरा है। तुम्हें यह जीवन जल कहाँ से मिल सकता है? अब वह परमेश्वर को अधिक सम्मानजनक “सर” कहकर संबोधित कर रही है। उसने आगे जांच की: क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं, जिसने हमें कुआँ दिया और खुद उसमें से पीया, और उसके बेटों और मवेशियों ने भी पीया (यूहन्ना ४:११-१२)? उनकी सोच में, याकूब से बड़ा कोई नहीं था और वह उस विशेष कुएं को खोदने के लिए जिम्मेदार था। उसका मानना था कि याकूब ने खुद भी अतीत में किसी समय कुएं से शराब पी थी। तो वह वास्तव में जो सवाल पूछ रही थी वह यह था, “क्या यह गैलीलियन रब्बी याकूब से बड़ा होने का दावा कर रहा था?”

यीशु ने यह उत्तर देकर आध्यात्मिक जल की ओर परिवर्तन किया: जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा, परन्तु जो कोई वह जल पीएगा जो मैं उसे दूंगा वह कभी प्यासा न होगा (योचनान ४:१३-१४a)। अपने शरीर को आवश्यक तरल पदार्थ से वंचित करें, और आपका शरीर आपको बता देगा। अपनी आत्मा को आध्यात्मिक जल से वंचित करो, और तुम्हारी आत्मा तुम्हें बताएगी। निर्जलित हृदय हताश संदेश भेजते हैं। कर्कश स्वभाव. चिंता की लहरें. अपराधबोध और भय के गुर्राते मस्तोडोन। क्या आपको लगता है कि ईश्वर चाहता है कि आप इसी तरह जियें? निराशा. नींद न आना. अकेलापन। क्रोध। चिड़चिड़ापन. असुरक्षा. ये चेतावनियाँ हैं. अंदर तक सूखेपन के लक्षण. अपनी आत्मा के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप अपनी प्यास के साथ करते हैं। एक घूंट लो. नमी पी लो. अपने हृदय को आध्यात्मिक जल के अच्छे घूंट से भर लें। आप आत्मा के लिए आध्यात्मिक जल कहाँ से पाते हैं? जो कोई प्यासा हो वह मेरे पास आए और पीए (यूहन्ना ७:३७)।

सामरी महिला से बात करना जारी रखते हुए, उसने उससे कहा: वास्तव में, जो पानी मैं

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 7

उन्हें दूंगा वह उस व्यक्ति के अंदर पानी का एक झरना बन जाएगा, जो अनन्त जीवन देगा (योचनान ४:१४b। इस श्लोक में जल, हमारे भीतर काम कर रहे रुआच हाकोडेश की एक तस्वीर है। बाद में झोपड़ियों के पर्व के आखिरी और महानतम दिन पर, यीशु ने कहा: यदि कोई मुझ पर विश्वास करता है, तो उस व्यक्ति के हृदय से जीवित जल की नदियाँ बह निकलेंगी, जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है। [उससे] उसका तात्पर्य आत्मा से था, जिसे बाद में उन लोगों को प्राप्त करना था जो उस पर विश्वास करते थे (योचनान ७:३८-३९)। आत्मा अभी तक नहीं दिया गया था, क्योंकि यीशु अभी तक पुनर्जीवित नहीं हुआ था।

अब वह सचमुच उत्सुक थी। तब स्त्री ने उससे कहा, “महोदय, मुझे यह पानी दे दीजिए ताकि मुझे प्यास न लगे और पानी भरने के लिए यहाँ आना न पड़े।” वह अभी भी नहीं समझी। यीशु के अगले शब्दों ने अप्रत्याशित रूप से उसे रोक दिया। उसने उससे कहा: जाओ, अपने पति को बुलाओ और वापस आओ। अब वह क्या कहे? वह फँसी हुई महसूस कर रही थी। उसके जीवन की सच्चाई इतनी भयानक थी कि वह इसे उसके सामने स्वीकार नहीं करना चाहती थी। वह मान रहा था कि वह एक सम्मानजनक घर और सम्मानजनक पति वाली एक सामान्य महिला थी। लेकिन वह सच्चाई से बहुत दूर था. इसलिए अपने जीवन की कुरूपता को उजागर करने के बजाय उसने उसे सच्चाई का केवल एक अंश ही बताया। “मेरा कोई पति नहीं है,” उसने उत्तर दिया (यूहन्ना ४:१५-१७ए)।

उसकी पूरी नाराजगी के कारण, वह पहले से ही क्रूर वास्तविकता को जानता था। यीशु ने उससे कहा: तुम ठीक कहती हो कि तुम्हारा कोई पति नहीं है। सच तो यह है कि तुम्हारे पाँच पति हो चुके हैं, और अब जो पुरुष तुम्हारे पास है वह तुम्हारा पति नहीं है। ध्यान दें उसने उसे झूठा नहीं कहा। इसके विपरीत, उन्होंने सच बोलने के लिए उसकी सराहना की। आपने अभी जो कहा वह बिल्कुल सत्य है (योचनान ४:१७b-१८)। वह अपने पाप से इनकार नहीं कर रही थी। . . लेकिन उसे इस पर विशेष गर्व भी नहीं था। इसलिए अपनी बची हुई गरिमा को बचाए रखने के लिए, उसने खुलेआम झूठ बोले बिना उनके सवाल के निहितार्थ को नजरअंदाज कर दिया। बात नहीं। वह वैसे भी घृणित विवरण जानता था। कुछ क्षण पहले, उसने सवाल किया था कि क्या वह याकूब से बड़ा था। अब वह जानती थी. जैसे- जैसे वे बातें करते गए उसका विश्वास बढ़ता गया।

फिर, उसने कहा: सर, मैं देख सकती हूं कि आप एक भविष्यवक्ता हैं (यूहन्ना ४:१९)। उसने उसे पूरी तरह बेनकाब कर दिया था. वह जो भी था, जाहिर तौर पर वह उसके बारे में सब कुछ जानता था। और फिर भी, उसकी आलोचना करने के बजाय, उसने उसे जीवन का जीवंत जल प्रदान किया था! सामरी लोगों का मानना था कि मोशे के बाद अगला भविष्यवक्ता मसीहा होगा। इसीलिए उन्होंने मोशे की पाँच पुस्तकों को ही अपने धर्मग्रंथ के रूप में मान्यता दी। उसे संदेह था कि यीशु मसीहा हो सकता है, लेकिन फिर भी शर्मिंदा होकर, उसने धर्मशास्त्र पर बहस करके अपने पाप की जांच से बचने की कोशिश की।

चौथी, सच्ची उपासना का पाठ है: देखो, अब स्वीकार्य समय है; देखो, अब मुक्ति का दिन

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 8

है (दूसरा कुरिन्थियों ६:२)।

हमारे पूर्वज इसी पर्वत पर आराधना करते थे, परन्तु तुम यहूदियों का दावा है कि जिस स्थान पर हमें आराधना करनी चाहिए वह यरूशलेम में है (यूहन्ना ४:२०)। गवाही में, जैसे ही आप पाप के मुद्दे पर आते हैं, सबसे पहली चीज़ जो लोग करना चाहते हैं वह है धर्मशास्त्र पर बहस करना। जैसे, “अरे हाँ, कैन को उसकी पत्नी कहाँ से मिली?” मानो इसका उनके पाप या मोक्ष से कोई लेना-देना हो। इसलिए वे अपने जीवन में पाप के प्रश्न से बचने के लिए धर्मशास्त्र पर बहस करने का प्रयास करते हैं। लेकिन उन्होंने बहस में शामिल होने से इनकार कर दिया।

यीशु ने उसके प्रश्न को नज़रअंदाज़ नहीं किया, भले ही वह जानता था कि वह क्या करने की कोशिश कर रही थी। उसने उसे एक संक्षिप्त, लेकिन बहुत ही सम्मोहक उत्तर देते हुए कहा: मेरा विश्वास करो, महिला, एक समय आ रहा है जब तुम न तो इस पहाड़ पर और न ही यरूशलेम में पिता की पूजा करोगे (ग्रीक: प्रोस्कुनेओ, जिसका अर्थ है चेहरे को चूमना)। ऐसा समय आ रहा है कि पूजा का कोई केंद्रीय स्थान नहीं होगा, न ही सिय्योन में या गेरिज़िम पर्वत पर, पूजा का उचित स्थान आत्मा और सत्य में होगा (यह तोरा की व्यवस्था के दौरान सच नहीं था, लेकिन व्यवस्था के दौरान सच था) मसीहाई साम्राज्य येशुआ व्यक्तिगत रूप से यरूशलेम में मंदिर से शासन करेगा और शासन करेगा)। तुम सामरी लोग उस चीज़ की पूजा करते हो जो तुम नहीं जानते; हम जो जानते हैं उसकी पूजा करते हैं, क्योंकि मुक्ति यहूदियों से है। उसके धार्मिक प्रश्न का उत्तर देने के बाद, प्रभु वास्तविक मुद्दे पर लौट आए: फिर भी एक समय आ रहा है और अब भी आ गया है जब सच्चे उपासक आत्मा और सच्चाई में पिता की आराधना करेंगे, क्योंकि वे उस प्रकार के उपासक हैं जिन्हें पिता चाहता है (युहन्ना ४:२१-२३).

परमेश्वर आत्मा है, और उसके उपासकों को आत्मा और सच्चाई से आराधना करनी चाहिए (यूहन्ना ४:२४)। इस कविता का कभी-कभी गलत विचार का समर्थन करने के लिए दुरुपयोग किया जाता है कि टोरा घटिया है या अब लागू नहीं है, इसे आत्मा और सच्चाई में पूजा (आध्यात्मिक और सही मायने में शाब्दिक प्रतिपादन) द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। लेकिन आध्यात्मिक और सच्ची पूजा की तुलना टोरा से नहीं की जा सकती। बल्कि, सच्ची, आध्यात्मिक पूजा एडोनाई का सार्वभौमिक मानक है, जिसे वह टोरा में भी आदेश देता है। टोरा क़ानूनवाद और ईश्वर के साथ सच्चे, आध्यात्मिक संबंध के बिना केवल कृत्यों और दिनचर्या के प्रदर्शन का विरोध करता है।

यीशु अंततः उसके विश्वास से निपटते हैं; उसे वास्तव में किस पर विश्वास करने की आवश्यकता थी। महिला ने कहा: मुझे पता है कि मेशियाक (मसीह कहा जाता है) आ रहा है। जब वह आएगा, तो हमें सब कुछ समझा देगा (योचनन ४:२५)। वह दृढ़ता से संकेत दे रही थी कि उसे संदेह है कि येशुआ स्वयं मसीहा हो सकता है। जब शमौन पतरस ने बाद में अपने विश्वास को स्वीकार किया कि प्रभु मसीहा, जीवित परमेश्वर का पुत्र था, तो येशुआ ने उससे कहा: योना के पुत्र शमौन, तू धन्य है, क्योंकि यह मांस और लहू के द्वारा

Ca – यीशु एक सामरी स्त्री से बात करते हैं यूहन्ना ४ का १ से
२६ | 9

तुझ पर प्रकट नहीं हुआ, परन्तु स्वर्ग में मेरे पिता द्वारा (मत्ती १६:१७)। यही बात उस सामरी स्त्री के बारे में भी सच थी। पवित्र आत्मा उसके हृदय में कार्य कर रहा था। परमपिता परमेश्वर उसे अटल रूप से मसीह के पास खींच रहा था, वह सत्य प्रकट कर रहा था जो किसी आँख ने नहीं देखा, जो किसी कान ने नहीं सुना (प्रथम कुरिन्थियों २:९a)।

तब गैलीलियन रब्बी पर्दा हटाने और अभूतपूर्व तरीके से अपनी असली पहचान प्रकट करने के लिए तैयार थे। जिस क्षण उसने मसीह के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की, उसने उत्तर दिया: मैं, जो तुमसे बात कर रहा हूं – मैं वह हूं (यूहन्ना ४:२६)। इससे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए था. पापियों का उद्धारकर्ता प्रकट हुआ। इतना ही काफी था. यह महसूस करना चौंका देने वाला है कि यीशु ने उस समय, उस स्थान और उस महिला को उस सेटिंग का हिस्सा बनने के लिए चुना जहां वह (पहली बार) खुद को मेशियाच के रूप में प्रकट करेगा। अपने विश्वासघात की रात तक, उसने फिर कभी यह स्पष्ट रूप से घोषित नहीं किया कि वह कौन था।

पहला कदम उठाया जा चुका था और सिचर के सामरी शहर में सुसमाचार के प्रवेश के लिए दरवाजा खुला हुआ था। अंततः, उसने उसे मसीहा के रूप में पहचान लिया और प्रेरित वापस लौट आये।

पिता, आपका वचन हमें आश्वस्त करता है कि कोई भी आशा से परे नहीं है। हमारी असफलताओं के बावजूद, आप हममें से प्रत्येक को स्वीकार करते हैं और प्यार करते हैं। आप हमें मोक्ष प्रदान करें. आप हमें दया प्रदान करें. आप हमें प्यार की पेशकश करते हैं. हमारे जीवन में हस्तक्षेप करने और हमें पाप के बंधन से बचाने के लिए धन्यवाद। हम आपकी दया, क्षमा और प्रेम के लिए आपकी स्तुति करते हैं।